# कुपोषण–एक सामाजिक अभिशाप

नीलू श्रीवास्तव*

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष कुपोषण के कारण पाँच साल से कम उम्र के लगभग 10 लाख बच्चे काल के गाल समा जाते है। यह एक सामाजिक चिंतन का विषय है, कि जिन कधों पर अगले बीस वर्ष बाद देश का भविष्य निश्चित होना है उनकी वर्तमान स्थिति काफी दयनीय है। भारत में अनसूचित जनजाति के 28 प्रतिशत,अनुसूचित जाति के 21 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के 20 प्रतिशत और ग्रामीण समुदाय के 21 प्रतिशत जनसंख्या पर कुपोषण का अत्यधिक बोझ है। कुपोषण अर्न्तराष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया है। विश्व बैंक ने इसे ब्लैक डेथ की संज्ञा दी है।

कुपोषण का तात्पर्य है पर्याप्त पोषण का अभाव जिसके कारण शरीर दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जाता है। बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास अवरूद्ध हो जाता है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि अल्प पोषित गर्भवती महिलाओं के बच्चे जन्म से ही कुपोषण के शिकार हो जाते है। यद्यपि कुपोषण के अनेक कारण है, जैसे खाद्यान्न की कमी, अज्ञानता, अशिक्षा,मिलावट,खाने की आदते,रीति रिवाज, किन्तु निर्धनता मुख्य कारण है। आर्थिक तंगी के कारण गरीब जनता खाद्य पर्दाथ क्रय नही कर पाती है। इस प्रकार वे कुपोषण के साये में जीवन गुजारने को विवस हो जाते है। यह चक्र पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है जब तक परिवार आर्थिक रूप से मजबूत नही हो जाता है। प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री डा0 अर्मत्यसेन के अनुसार गरीबी और भूखमरी को एक साथ जोड़कर देखना चाहिए। संकट यह नही है कि देश में अनाज का अभाव है या उत्पादन अचानक न्यूनतम स्तर पर आ गया है। असली संकट यह है कि लोगो के पास पैसा नही है कि अनाज खरीद सकें। गरीबी और भूखमरी का एक अर्थशास्त्र और भी है कि गरीबी भूखमरी को बढ़ाती है। ये दोनो शारीरिक शक्ति हीनता को बढ़ाते है जिससे श्रम और सकल की मात्रा और क्षमता का हास होता है। यह स्थिति उत्पादन को घटाती है और न्यून उत्पादन गरीबी को बढ़ा देता है। इस प्रकार गरीबी और भूखमरी का कुचक्र प्रारम्भ हो जाता है।इस तथ्य को इस प्रकार आसानी से समझा जा सकता है–

कुपोषण–शारीरिक व मानसिक क्षमता का हास–उत्पादन में कमी– आय में कमी–गरीबी– क्रयशक्ति हीनता– खाद्य असुरक्षा।

एक रिर्पोट के अनुसार कुपोषण के कारण मानव उत्पादकता में 10–15 प्रतिशत तक कम हो जाता है जो सकल घरेलू उत्पाद को 5–10 प्रतिशत कम कर सकता है। कुपोषण के कारण बच्चो का सीखने में मन नही लगता है,वे स्कूल छोड़कर भागने लगते है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान के द्वारा एक अध्ययन में पता चलता है कि मध्य प्रदेश भारत में कुपोषण से सबसे ज्यादा शिकार राज्य है। भारत में 500 से ज्यादा ऐसे राज्य है जो अति गरीबी रेखा के श्रेणी में आते है जो दोनो वक्त भरपेट भोजन नही कर पाते है। पोषण की अपर्याप्तता के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में मृत्युदर 67 प्रति हजार है। भारत में कुपोषण की दर लगभग 55 प्रतिशत है, जवकि उपसहारीय अफ्रीका में यह 27 प्रतिशत के आस–पास है। गरीबी के कारण लोग अपने बच्चों को उचित मात्रा में दूध और पौष्टिक आहार नही दे पाते है,जिससे वे प्रोटीन कैलोरी कुपोषण के शिकार हो जाते है। प्रोटीन कैलोरी कुपोषण के कारण सामान्य रूप से वृद्धि रूक जाती है, सास लेने में आक्सीजन की कमी, शरीर में सूजन आना, त्वचा सूखी, झुर्रीदार व चकत्तेयुक्त हो जाती है और पाचन अव्यस्था बनी रहती है। क्वाशरकर और मरामस्मस ऐसे रोग है जो प्रोटीन व उर्जा की कमी से हाने वाले रोग है। भारत में लगभग 36 मिलीयन बच्चे लगभग इस रोग से पीड़ित है।

यूनिसेफ के रिर्पोट के अनुसार भारत में प्रत्येक वर्ष पाँच साल के लगभग 10 लाख बच्चों की मौत हो जाती है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे की तीसरी रिर्पोट के अनुसार 60 प्रतिशत बच्चे कम वजन के शिकार है व 40 प्रतिशत बच्चे वृद्धि की समस्या से ग्रस्त है। अब समय आ गया है कि सरकार कुपोषण को मेडिकल इमर्जेन्सी घोसित करें व युद्ध स्तर पर रणनीति बनाकर कुपोषण की समस्या का

* शोध छात्र

सामना करें। सरकारी नीतियां व योजनाएं जो कुपोषण के रोकथाम के लिए पूर्व से चलाई गयी है उनका प्रत्येक स्तर पर मल्यांकन करने की आवश्यकता है और उन्हे प्रभावी बनाने के लिए अपेक्षित सुधार किया जाना चाहिए। मिड डे मील, समन्वित बाल विकास सेवाएं, राष्ट्रीय खाद्य्य सुरक्षा अधिनियम व राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थय मिशन आदि योजनाओं को अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए और प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता हैं।सार्वजनिक खाद्यान्न वितरण प्रणाली व खाद्य्य भण्डारण नितियों में प्रत्येक स्तर पर सुधार कर अनाज की बरबादी रोकी जानी चाहिए। कुपोषण और भुखमरी एक सभ्य समाज के लिए बड़े शर्म की बात है, सिर्फ सरकार की नही बल्कि प्रत्येक सर्मथ नागरिक का उत्तरदायित्व है कि वह कमजोर वर्ग के प्रति संवेदनशील बनें।

**सन्दर्भ :**


- खनूजा रीना आहार एवं पोषण विज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2009।
- विकिपीडिया, भारत में कुपोषण ,मयूर सर्वे–7 28 जुलाई 2016।
- एनएफएचएस रिर्पोट द्वितीय एवं तृतीय।
- स्वामीनाथन एम0एस0 फूड एण्ड न्यूट्रीशन बैंगलौर प्रिटिंग पब्लिकेशन कं0 लिमिटेड 2003।